मूल्यानुगत मीडिया के मायने

आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव

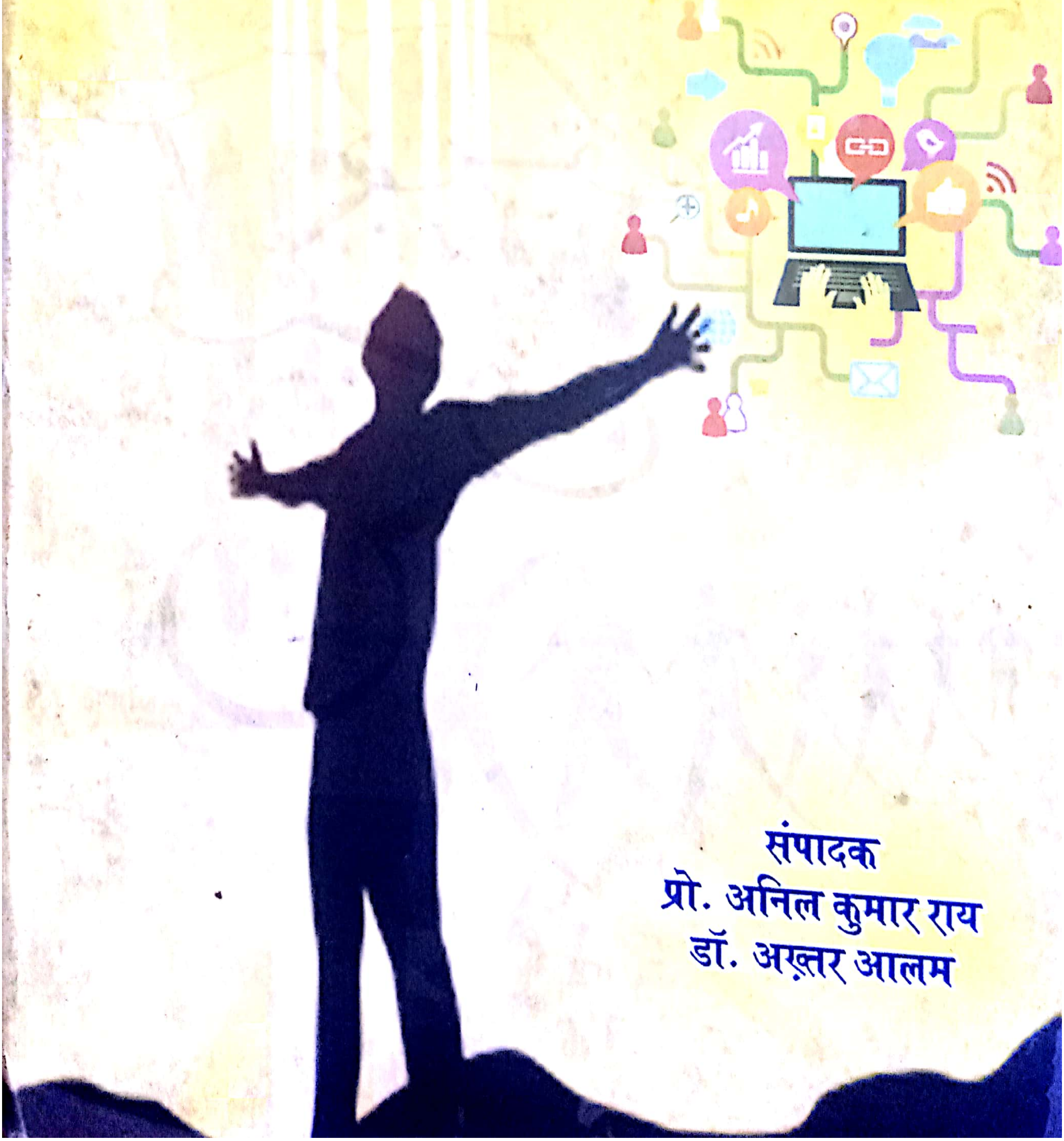

संपादक
प्रो. अनिल कुमार राय
डॉ. अख़्तर आलम

Scanned by CamScanner

मूल्यानुगत मीडिया के मायने

आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव

संपादक

प्रो. अनिल कुमार राय

डॉ. अफ़्ज़ार आलम

प्रकाशन

शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली–110007

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-85144-77-6

© प्रो. अनिल कुमार राय

ई-मेल : raianilankit@gmail.com

प्रकाशक : शिवालिक प्रकाशन

27/16, शक्ति नगर, दिल्ली-110007

फोन नं – 011-42351161

प्रकाशन वर्ष : 2016

संस्करण : **प्रथम**

प्रकाशन सहयोग : भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय मीडिया संगोष्ठी "आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव" के आयोजन के लिये प्राप्त सहयोग धनराशि के प्रावधान के तहत प्रकाशित।

मुद्रक : गुरुकृपा क्रियेशन

रामाकृष्णा हॉटेल के पीछे मेन रोड वर्धा महाराष्ट्र

मो. 8888993996

नोट : पुस्तक में संकलित आलेखों में लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

Scanned by CamScanner

आलेख/शोध–पत्र अनुक्रमणिका

क्र. स.	शीर्षक	लेखक	पृ. स.
1.	सामाजिक सरोकार और मीडिया की भूमिका (बिलासपुर जिले के संदर्भ में)	डॉ. गोपा बागची, गुरु सरन लाल	1–5
2.	मीडिया के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति में निहित नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता (श्री रामचरितमानस के विशेष संदर्भ में)	डॉ. उर्वशी परमार	6–11
3.	सामाजिक परिवर्तन एवं संचार माध्यम	सुश्री तसनीम खान	12–16
4.	सामुदायिक मीडिया "अप्पन समाचार" का वैयक्तिक अध्ययन (बिहार के सामुदायिक टीवी चैनल अप्पन समाचार के विशेष संदर्भ में)	शिवेन्द्र मिश्रा	17–21
5.	आध्यात्मिक संचार का विस्तार और आधुनिक जनमाध्यम	रिन्जु राय	22–28
6.	संस्कृति, सभ्यता, मूल्य और मीडिया	डॉ.गुणवन्त सोनोने	29–32
7.	जनसंचार माध्यमों द्वारा सामाजिक परिवर्तन (ओडिसा राज्य के विशेष संदर्भ में)	तेलाराम मेहेर	33–37
8.	सामुदायिक विकास की केन्द्रीय भूमिका में सामुदायिक रेडियो	अनिल कुमार पाण्डेय	38–42
9.	आध्यात्मिकता और मीडिया	प्रसाद शिवाजी जोशी	43–46
10.	भारतीय लोकतंत्र में युवाओं और मीडिया का बढ़ता वर्चस्व–साकारात्मक या नाकारात्मक पहल	राहुल कुशवाहा	47–50
11.	बाजारवाद और भारतीय पत्रकारिता मूल्य	डॉ. शिखा शुक्ला	51–57
12.	भारतीय संस्कृति और साहित्य का प्रतिबिम्ब हिंदी सिनेमा	डॉ. केदारनाथ	58–65
13.	भारतीय संस्कृति और मीडिया	डॉ. अमिता	66–69
14.	सामाजिक परिवर्तन के लिए रंगमंच : माध्यम की भूमिका	डॉ. सतीश पावडे	70–72
15.	'कल्याण की अंतर्वस्तु में सन्त	डॉ. रजनीश कुमार चतुर्वेदी	73–80
16.	जनसंचार माध्यमों की लोकप्रिय संस्कृति	डॉ. संदीप कुमार	81–84
17.	आमजन को जागरूक करने में पारंपरिक संचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन	सुनीता	85–91
18.	योग के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण	हिमानी सिंह	92–97

Scanned by CamScanner

36. मुख्यधारा की पत्रकारिता में नागरिक पत्रकारिता की भूमिका (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)	चेतन भट्‌ट	196–203
37. विज्ञापन के सामाजिक सरोकार के मुद्दे	शशि गौड़	204–210
38. सामाजिक परिवर्तन और संचार माध्यम 211–216	रूपा केरकेट्टा	
39. वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास एवं सामाजिक परिवर्तन में विज्ञान संचार की भूमिका	अंकिता मिश्रा	217–223
40. राजनीतिक अभिमत निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन (लोकसभा चुनाव 2014 के विशेष संदर्भ में)	शिवेंदु कुमार राय	224–229
41. मीडिया और सामाजिक सरोकार के मुद्दे	मो. जसीम अहमद	230–231
42. सामाजिक परिवर्तन में हिंदी सिनेमा की भूमिका: इप्टा आंदोलन से जुड़े कलाकरों से संदर्भ में	आदित्य कुमार मिश्रा	232–237
43. भूमंडलीकरण के दौर में मीडिया	दीपमाला त्रिपाठी	238–242
44. मध्ययुगीन संतों के समाजीकरण में वाचिक संचार की भूमिका	शोभा बिसेन	243–246
45. थर्ड जेंडर के प्रति मीडिया का दृष्टिकोण	शाहीन बानो	247–251
46. लोकतंत्र में संचार माध्यमों की भूमिका 252–253	राकेश कुमार	
47. उपभोक्ता जागरुकता में बदलाव और विज्ञापन 254–258	विकास चन्द्र	
48. आज यथार्थवादी सिनेमा का व्यावसायीकरण (विशेष संदर्भ भारतीय सिनेमा	अनीष कुमार	259–261
49. फेसबुक उपयोगकर्ता के पोस्ट पर प्रतिक्रिया का अन्तर्वस्तु विश्लेषण	प्रदीप कुमार	262–267
50. बाज़ारीकृत मीडिया से दरिद्र होती मानव सभ्यता	श्रीकांत जायसवाल	268–271
51. "दलित–आदिवासियों के बौद्धिक जागरण में वैकल्पिक पत्रिकाओं की भूमिका"	नरेश कुमार साहू	272–277
52. वैश्वीकरण : मीडिया एवं समाज	पंकज प्रजापति	278–283
	देवेंद्र नाथ तिवारी	
53. सामाजिक परिवर्तन और संचार माध्यम	विजय कुमार कन्नौजिया	284–288
54. समाज का आध्यात्मीकरण और पत्रकारिता (स्वामी विवेकानंद के विशेष संदर्भ में)	अमरेन्द्र कुमार आर्य	289–295

Scanned by CamScanner

मध्ययुगीन संतो के समाजीकरण में वाचिक संचार की भूमिका

शोभा बिसेन

प्रस्तावना

मनुष्य स्वभावतः एक आदिम प्राणी है। अभिव्यक्ति की कला तथा संचार की प्रक्रिया के माध्यम से वह सामाजिक बन पाया है। चूँकि संचार किसी भी समाज की आधारभूत आवश्यकता है। या यूँ कहें कि संचार समाज के निर्माण की पहली शर्त है। सदियों से अलग–अलग समाजों ने संचार के लिए विशिष्ट माध्यमों को विकसित किया है। प्राचीन काल में मनुष्य के पास संचार का कोई तकनीकी साधन उपलब्ध नहीं था। वह प्राय आपसी बोलचाल या संकेतो के माध्यम से ही अपने भावों व विचारों को दूसरों के सामने प्रकट कर पाता था, किन्तु उसकी अभिव्यक्ति या संचार का कोई व्यापक परिप्रेक्ष्य नहीं था, इसलिए संचार की वाचिक परंपरा का बहुत अधिक विस्तार लोगों के बीच नहीं था।

मानव विकास और संचार :– मानव का विकास प्रकृति से टकराते हुए निरंतर अपने अस्तित्व को बचाये रखने की जद्दोजहद का परिणाम है। जिसमें उसने सर्वप्रथम समूह में रहना आरंभ किया। अपनी आदिम अवस्था में मानव अपने सहयोगियों के साथ शिकार के दौरान संकेतों और ध्वनियों के रूप में संचार करता था किन्तु यह संचार बहुत व्यवस्थित नहीं था। उनके समूह में ध्वनियों और इशारों के विशेष अर्थ थे जिन्हें वे आपस में समझ जाते थे। इसी दौरान अनेक आदिमानव समाजों ने गुफाओं में भिति चित्रों के रूप में अपनी भावनाओं को उकेरना भी आरंभ कर दिया। दुनिया के अनेक हिस्सों में इस प्रकार के चित्र पाये गये हैं। मध्यप्रदेश के भीम बेटका में भी शिकार करते मानव के चित्र पाये गये, जिन्हें विद्वान आदि मानव काल का बताते हैं। इस प्रकार के चिन्ह संकेत या भित्ति चित्र संचार का आदिम रूप माना जा सकता है।

घुमन्तू व शिकारी जीवन के बाद मानव जब व्यवस्थित जीवन व्यतीत करने के लिए कबीलों में रहने लगा तो उसका संचार भी पहले से व्यवस्थित हुआ। मनुष्य ने सभ्यता के विकास से पूर्व ही संचार प्रक्रिया को सीख लिया था। किन्तु संचार के लिए भाषा की खोज (भाषा का जन्म) उसकी एक बड़ी उपलब्धी थी। सभ्यता के विकास काल (लगभग 7000 वर्ष ईसा पूर्व) को ही भाषा का उत्पत्ति काल माना जाता है, जब मनुष्य ने घुमंतू जीवन को त्यागकर खेती करने व नगर बसाने की शुरुआत की। उदाहरण के तौर पर हड़प्पा सभ्यता को लिया जा सकता है जिसमें मूर्तियों एवं सिक्कों के रूप में प्रतीक के तौर पर समाज की एक समृद्ध भाषा का विकास मिलता है।

वैदिक काल में श्रुतियां और वेद सभी कुछ वाचिक परंपरा में मौजूद था। सारा ज्ञान वाचिक परंपरा के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचता था। गुरू अपने शिष्यों को पूरा का पूरा वेद याद करवा देते थे। वेदों को बहुत बाद में लिपिबद्ध किया गया। पहले–पहल ऋचाओं को पत्तों पर लिखकर सहेजने की कोशिश की गयी। बौद्ध और जैन काल में समृद्ध भाषा विकसित हो चुकी थी और उसको पत्थरों पर उकेर कर स्थाई बनाने की भी परंपरा थी। महात्मा बुद्ध ने आम लोगों द्वारा बोले जाने वाली और प्रकृत भाषा में अपने प्रवचन दिये ताकि जन–जन तक उनकी बात पहुंचे। मंदिर संचार के प्रभावशाली केन्द्र होते थे जहां मूर्तियों के अलावा धार्मिक कर्म–कांडों के जरिये भी संचार होता था। इस काल में

Scanned by CamScanner

ढोल–नगाड़ों के माध्यम से गांव–गांव में मुनादी भी राजा के आदेशों को जनता तक पहुंचाने का एक माध्यम थे। इस प्रकार प्राचीन समाज में वाचिक परंपरा लंबे समय तक संचार का प्रमुख माध्यम बनी रही।

वाचिक (मौखिक) संचार का अर्थ :– मनुष्य द्वारा आपसी बोलचाल के माध्यम से या काव्यात्मक रूप में अपनी बातों को समाज के अन्य लोगों तक पहुंचाने की प्रक्रिया वाचिक (मौखिक) संचार कहलाती है। समाज में जब मुद्रण माध्यम का विकास नहीं हुआ था, तब मनुष्य अपनी सभ्यता व संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए संचार के वाचिक रूप का ही सहारा लेता था। मनुष्य आपसी बातचीत, गीत–संगीत, नृत्य के माध्यम से अपनी भावनाओं को लोगों तक पहुंचाता था। संचार की यही परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों को जागरूक व शिक्षित करने का माध्यम रही। वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति तथा काफी हद तक प्रारम्भिक गुरुकुल शिक्षा वाचिक संचार पर ही आधारित थी। जहां गुरुकुल नहीं भी था वहाँ भी आगे चलकर संत–महात्माओं ने भक्ति के प्रचार–प्रसार और सामाज में जन–जागृति व चेतना फैलाने के वाचिक संचार का सहारा लिया एवं समाज को जागरूक करने का कार्य किया।

समाजीकरण में संचार की भूमिका :– मनुष्य की सामाजिक व सांस्कृतिक परम्पराओं के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरण की प्रक्रिया को सामाजीकरण कहते हैं, जिसमें संचार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती हैं। सामाजीकरण का मूल आधार संचार ही है। सामाजिक निरंतरता को बनाए तथा बचाए रखने के लिए संचार के विविध विधाओं (काव्य, गीत–संगीत, नृत्य, लोक कलाएं आदि) का होना अनिवार्य है। इसकी अनिवार्यता का अनुमान बड़े ही आसानी से लगाया जा सकता है, क्योंकि समाजीकरण की प्रत्येक क्रिया संचार पर ही निर्भर हैं। उदाहरणार्थ, मानव संचार की मदद से जैसे–जैसे सांस्कृतिक अभिवृत्तियों, मूल्यों और व्यवहारों को आत्मसात करता जाता है, वैसे–वैसे जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी बनता जाता है। इस प्रकार, संचार तथा सामाजिक जीवन के बीच काफी गहरा सम्बन्ध दिखाई देता है। सामाजिक सम्बन्धों के लिए पारस्परिक जागरूकता का होना जरूरी है। मानसिक जागरूकता के अभाव में सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण संभव नहीं है। वर्तमान समाज में संचार ने एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक भूमिका को अधिग्रहित कर लिया है। विशेषज्ञों का दावा है कि संचार के विविध माध्यमों की तीन महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रक्रियाएं हैं– समाजीकरण, सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक नियंत्रण। संचार समाजीकरण का प्रमुख माध्यम है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा मनुष्य सामाजिक प्राणी बनता है। इस प्रक्रिया के बिना न तो समाज जीवित रह सकता है, न तो संस्कृति बच सकती है और न तो सामाजिक मनुष्य का निर्माण हो सकता है। समाजीकरण की प्रक्रिया में संचार माध्यमों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। प्रारंभ में जब संचार माध्यमों का विकास नहीं हुआ था, तब समाजीकरण का एक माध्यम साधन मौखिक संचार था, जिसमें परिवार नामक प्राथमिक समूह के सदस्य भाग लेते थे। यह प्रक्रिया काफी सीमित थी। मुद्रण तकनीकी के विकास से लोगों को लिखित रूप में सामग्री उपलब्ध होने से उनके ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार हुआ। प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक माध्यमों जैसे– समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, इंटरनेट इत्यादि माध्यमों के आगमन से सीखने की प्रक्रिया में तथा सूचना संदेश की उपलब्धता बढ़ गई।

Scanned by CamScanner

मध्ययुगीन संतो के सामाजीकरण में वाचिक संचार :– मुद्रण तकनीक से पूर्व प्राचीन समाज में सामाजीकरण के साधन के तौर पर जिस वाचिक संचार शुरुआत हुई, उसका विकसित रूप हमें मध्ययुग में परिलक्षित होता है। मध्ययुग में वाचिक संचार के माध्यम से लोगों को आपस में अधिक से अधिक जोड़ने व सत्कार्यों के लिए प्रेरित करने व उनके सामाजीकरण का सबसे पहला सार्थक प्रयास संत समाज ने किया। संतों ने ही संचार की वाचिक परंपरा का सर्वाधिक विस्तार भी किया। मध्यकाल में (तेरहवी शताब्दी के बाद से) संत मत का प्रचलन बढ़ा। संतो के धर्म, ब्रह्म विज्ञान, प्रेम भक्ति के दैवीय सिद्धांतों, समाज सुधार की शिक्षा एवं उनके समतावादी विचारों के संचार से समाज में उनकी पद–प्रतिष्ठा बढ़ती चली गई। जैसा कि पहले ही कहा है कि मध्ययुग में संतो के पास संचार का कोई तकनीकी साधन उपलब्ध नहीं थे। संत लोग अपने विचारों (मत) का प्रचार–प्रसार व संचार लोगों के बीच घूम–घूम कर, तथा काव्यात्मक रूप में गा कर करते थे। वे एक स्थान से दूसरे स्थान में घूम–घूम कर, समाज के लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों का मुआइना करके, उन्हीं के बीच उनकी स्थितियों को संबन्धित पद या दोहों के माध्यम से प्रस्तुत कर देते थे। इसमें संतो का अपना सामाजिक–धार्मिक व्यवहार भी शामिल होता था।

उत्तर भारतीय संतों में कबीरदास, रविदास (रैदास), दादू जैसे संत हुए जिन्होंने ज्ञान व भक्ति के मिले–जुले रूप में समाज सुधार व हाशिये के लोगों (स्त्री, शूद्र, दलित) के उद्धार संबंधी मतों के प्रचार–प्रसार के माध्यम से अपनी एक नई सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत तैयार की। संतों ने समाज में मानव–प्रेम की एक सुदृढ़ आधारशिला रखी थी। उन्होंने प्रेम का संबंध ईश्वर से जोड़कर मनुष्यमात्र को इसमें मिला दिया। कबीरदास ने 'कहे कबीर एक राम जपहु रे भाई, हिन्दू तुरक में भेद न कोई' कहकर धार्मिक विभेद को स्पष्ट करते हुए समाज में धार्मिक एकता कायम करने का अनूठा कार्य किया। संतों ने साधारण जनता में व्यावहारिक सिद्धांतों के प्रतिपादन का कार्य करते हुए मनुष्य को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया। संकीर्ण मान्यताओं में जकड़े समाज को अपने स्वानुभूत ज्ञान की शिक्षा देकर रैदास ने मनुष्य को समान मानने की बात कही– **"ऐसा चाहौ राज मैं, जहां मिलै सबा को अन्न। छोटा बड़ों साथ सम बसै, रविदास रहे प्रसन्ना।"** इस प्रकार कबीर, रैदास व अन्य संतों ने प्रेमाभिव्यक्त सामाजिक एकता पर बल देते हुए वाचिक संचार के माध्यम से अपना सामाजीकरण किया है।

इनसे पहले दक्षिण भारतीय संत नामदेव, रामानन्द जैसे संतों ने भी भक्ति रूपी ज्ञान के माध्यम से सत्यकर्म, ईमानदारी, आपसी सद्भाव तथा समाज सुधार के मतों का संचार किया तथा समाज में अपनी एक भूमिका निर्धारित की। वर्तमान समय में भी संतों की वाणी बहुत उपयोगी है। आज समाज में व्याप्त टूटन, बिखराव, संत्रास, कुंठा इर्ष्या, निराशा, धार्मिक कट्टरता से घिरे समाज में आज भी मध्ययुगीन संतो की वाणी (संचार) शीतल जल की बौछार की तरह है। ये वाणियाँ समानता, विश्व–बंधुत्व, दया, परोपकार, सहनशीलता, धार्मिक एकता की भावना का संचार करती है। आज के समय में भी वह भटके हुए समाज के सही पथ प्रदर्शन की क्षमता रखती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संचार की वाचिक परंपरा का जितना अधिक मध्यकाली संत समाज ने अपनाया, वर्तमान समय का संत समाज भी आधुनिक तकनीकों के

Scanned by CamScanner

माध्यम से उसी वाचिक संचार का विस्तार कर रहा है। क्योंकि यह सर्वविदित सत्य है कि समाज चाहे कितना भी शिक्षित क्यों न हो, अधिक–से–अधिक लोगों तक विचारों का प्रचार–प्रसार वाचिक रूप में आसानी से किया जा सकता है बनिस्बत लिखित रूप के। क्योंकि समाज में बहुत कम लोग होते हैं जो दैनिक जीवन की भागदौड़ के बाद पढ़ने का साहस कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में श्रवण के माध्यम से अधिक से अधिक चीजों को जानने की कोशिश की जाती है। ऐसे में संत समाज हो या मनुष्य, संचार का वाचिक रूप ही दोनों के समाजीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. सं. शर्मा, शमीम, पंचनाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (2008)
2. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. http://bjmc110401-blogspot-in/2013/11/ -html
4. http://www-newswriters-in/2015/07/07/traditional&media&struggling&for&survival
5. https://hi-wikipedia-org/s/9b9

शोधार्थी साहित्य विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा

Scanned by CamScanner